गज़लें

विभांशु दिव्याल

एक

संसद से सत्ता तक छाए
दिल के मैले काले लोग
जिनको पहरे पर बिठलाया
वही डकैती डाल गए
आखिर अपनी इस बस्ती को
किसको करे हवाले लोग़
सच्चे सरोकार थे जिनके
सरका कर सब परे किए
यहां राष्ट्र चिंतन करते हैं
चंद निकम्मे लाले लोग
इतने फंदे बुने सभ्यता
खुद जी का जंजाल हुई
अब आकर यह सोच रहे हैं
कैसे काटें जाले लोग
चारों ओर अंधेरा दीखे,
आंधी के आसार दिखें
फिर भी दिया जलाने बैठे
कुछ पागल मतवाले लोग

दो

यह व्यवस्था और इसके
तोप-गोले आपके
हम कहां जाकर रहें
सब गांव-टोले आपके
पेट अपने पास है
इसमें उमड़ती भूख भी
दूध-चावल आपके
सब रोट-छोले आपके
आपने संपत्ति के
अधिकार हमको दे दिए
पर उसे किसमें भरें
सब जेब-झोले आपके
खेत और खलिहान लेकर
हम करें तो क्या करें
बूंद, बारिश, बिजलियां
सब मेघ- ओले आपके
तय करें कैसे कि हम
किस वेश में कैसे दिखें
जिस तरफ़ देखें वहां
सब रूप चोले आपके

तीन

रोशनी अंधी, सड़क लंगड़ी,
सड़ा पानी हुजूर
आप इसको मानिये
अपनी मेहरबानी हुजूर
सौ उजाड़े, बीस मारे,
और दो बसवा दिए
इस शहर को कब मिलेगा,
आप-सा दानी हुजूर
आपके ही कर्म कौशल का
सुफल है देखिए
अब यहां पर हो रही है
सिर्फ़ मनमानी हुजूर
आप हैं दिन के दिये
और रात की कालोंच हैं
इस मुहल्ले में नहीं है
आपका सानी हुजूर
वेद के संदर्भ अपने
नाम से छपवा लिये
खोज कर लाएं कहां से
आप-सा ज्ञानी हुजूर

चार

आप ही भिजवाइए
उनके लिए नंगे सलाम
हमको लगता है कि उनकी
हर व्यवस्था है हराम
इस जगह इंसान को
क्या खोजना क्या देखना
इस जगह पर बस रहे हैं
देश के नेता तमाम
कल इन्हीं के होंठ पर था
मुल्क का ताज़ा लहू
आज इनके हाथ में है
मुल्क की सेहत का जाम
कत्ल जिसने कर दिए थे
इल्म के अक्षर सभी
देखिए वह आ रहा है
अदब का लेकर इनाम
आज लगता है किसी की
आबरू लुट जाएगी
आज शिद्दत से लिया है
उसने पैगंबर का नाम

पांच

इस कदर बेहूदगी है
आपके दरबार में
काटते थे जेब कल वे
आज है सरकार में
बेचकर जो मुल्क को
अय्याशियां करते रहे
कह रहे हैं वे उन्हें
घाटा बहीुत व्यापार में
जिस्म का धंधा चला कर
कोठियों तक आ गए
अब खबर है जी रहे हैं
वे किसी के प्यार में
हिन्दुओं का मुल्क है यह
वह मुसलमानों का मुल्क
जो महज़ संसार है यह
वह मुसलमानों का मुल्क
जो महज़ इंसान हैं
जाएं कहां संसार में
इस कदर आदर्शवादी
सोच है उस शख्स की
क्या पता वह कल मिलेगा
कौन सा किरदार में

छः

तू तमाचा जड़ न पाया
इसका यूं न मलाल कर
जा उधर से फ़िर गुज़र
पर एक ईंट उछाल कर
बहुत तीखे हो गए हैं
वक्त के सारे सवाल
आप कैसे बच सकेगे
और इनको टाल कर
नम्र भाषा यह व्यवस्था
अब समझ पाती नहीं
जा खड़ा हो जा सड़क पर
चीख और धमाल कर
जंग के माहौल में उस
शख्स की क्या बात हो
घर सुरक्षित समझता है
चार पिल्ले पाल कर
जो लपट-सी उठ रही है
तेरे सीने में अभी
यह लपट ही ज़िन्दगी है
रखना यार संभालकर

भविष्य निधि वसूली अधिकारी बना मज़दूर हितों का भक्षक

फ़रीदाबाद (म.मो.) पता चला है कि लखानी समूह की तरफ भविष्य निधि की बहुत बडी देनदारी है। समूह ने अपनी देनदारी चुकाने के लिए कोई एक वर्ष पहले भविष्य निधि कार्यालय को अपना एक प्लांट दे दिया और प्रार्थना की कि वह इसे बेचकर अपनी सभी बकाया राशि वसूल कर लें, कम्पनी के पास पैसे नहीं हैं क्योंकि वर्षों से समूह काफ़ी घाटे में चल रहा है। इसके बाद समूह ने वसूली अधिकारी से कोई तीन महीने पहले एक और प्रार्थना की कि उनके पास कुछ पुरानी मशीनें व कबाड़ा पड़ा हुआ है। आप अनुमति देवें कि समूह इसे बेच देवे और जो पैसा मिलेगा वह भविष्य निधि कार्यालय में जमा करवा दिया जाएगा। लेकिन आज तक ना तो प्लॉट बेचा और ना ही पुरानी मशीनरी व कबाड़ा बेचने की अनुमति दी। समूह ने यह भी प्रार्थना की कि उपरोक्त वर्णित सामान को जल्द से जल्द बेचा जावे क्योंकि भविष्य निधि का जो बकाया है उसपर जुर्माना व ब्याज भी लग रहा है। कम्पनी चाहती है कि वह अपनी देनदारी जल्द से जल्द अदा करे। इसलिए कम्पनी वसूली अधिकारी से बार-बार प्रार्थना कर रही है लेकिन वसूली अधिकारी कहता है कि उसे इससे क्या मिलेगा? ''पहले मेरी सेवा करो तभी मैं कार्यवाही करूंगा।''

नियमानुसार कम्पनी को इसे बेचने की अनुमति दे देनी चाहिए, ऐसा सी.पी.-21 वसूली के मैनुअल में साफ़ बतलाया गया है। मगर यहां तो मज़दूरों के भविष्य निधि की रक्षा न करके अपनी जेब भरने की पड़ी हुई है।

क्या आज मज़दूर भारत की नई सरकार से यह उम्मीद कर सकता है कि वह ऐसे भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ़ सख्त कार्यवाही करे जो जनता की भलाई की बजाय अपनी जेब भरने में लगे हुए हैं

प्यार करना एक राजनीतिक काम है

-कीर्ति सुन्दरियाल

समाज में प्रेम कहानियों के अनगिनत किस्से और मिशालें दी जाती रही हैं। फिल्मों के पर्दों से लेकर सामाजिक बहसों में बड़ा वर्ग प्रेम के साथ खड़ा हुआ दिखता है। इसके बावजूद जब हरियाणा के एक गांव में दो प्रेमियों की हत्याएं होती हैं। और हत्याओं के समर्थन में पूरा गांव खड़ा होता है, तो वह हत्याओं को वाजिब करार देता है। घर के लोग और रिश्तेदार इस हत्या को जायज मानते हैं। ये लोग हैं जिनके पास मध्यम वर्ग की सभी सुविधाएं, आधुनिकता के सारे माध्यम मौजूद हैं। फिर यह कैसा समाज है जो प्यार करने पर जान ले लेता है? भारतीय समाज असफल प्रेम कहानियों पर आंसू बहाने वाला समाज रहा है। हीर रांझा जैसी जोड़ियों को प्यार की मिशाल के तौर पर पेश करना एक चालाकी भी है, क्योंकि असफल प्रेम कहानियों से पितृसत्तात्मक व्यवस्था और संस्कृति को किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं होता। प्यार शायद ऐसा रिश्ता है जिसमें यथास्थितिवाद को तोड़ने का मौलिक गुण है, इसलिए जड़ व्यवस्थाएं इससे डरती हैं। इसलिए प्यार एक राजनीतिक काम हो जाता है। खासतौर से उनके लिए जो व्यवस्था के बदलाव के पक्ष में खड़े होते हैं। उनके लिए भी जो व्यवस्था बदलाव के पक्ष में नहीं हैं पर प्रेम करते हैं या करना चाहते हैं।

कहानियों, फिल्मों से इतर भारतीय समाज में प्यार करना अभी भी अच्छा नहीं माना जाता। जब कोई प्यार करता है तो समाज के कैमरे में उसकी हर गतिविधि कैद होती है और यहां कुछ तो आपके सामने कहा जा रहा होता है और कुछ चटकारे लेते हुए फुसफुसाहटों के साथ बताया जा रहा होता है। ऐसा क्यों है कि प्यार की लोग घंटों चीड़फाड़ करते हैं? युवा समूहों में भी प्यार के बारे में सबसे ज्यादा बातचीत होती है पर वह बातचीत सेक्सुअल प्लेजर लेने के लिए ज्यादा इन्हीं चीज़ों पर बात करते हैं, क्योंकि वे इसे राजनीतिक काम के रूप में कभी नहीं देखते। यह उनके जीवन में राजनीति से एक इतर प्रसंग होता है। भारतीय समाज में प्यार को पा लेना एक कठिन लड़ाई है। यह लड़ाई हमें अपने आसपास के लोग़ों, मां-बाप, भाई-बहन, रिश्तेदारों, दोस्तों से लड़नी पड़ती है। बड़े रूप में यह लड़ाई राज्य के साथ बनती है क्योंकि अपने छोटे संस्थानों पर हुए हमले से वह हिलता है।

अगर दो लोगों के प्रेम सम्बंधों में जाति, वर्ग, सामाजिक हैसियत की साम्यता है तो भी ऐसे सम्बंधों को सम्मान और मान्यता समाज नहीं देता जितना वह परिवार द्वारा तय किये गये रिश्तों को देता है। अगर प्रेम सम्बंध इन सब के विपरीत है यानि उनके बनाये गये मापदंडों के जो जाति, भाषा, संस्कृति, वर्ग और सुन्दरता के तथाकथित मानकों को तोड़ते हैं, तो वे प्रेम निश्चित ही अपने चरित्र में परिवर्तनकामी होते हैं। समाज के डर से ऐसे लाखों प्रेम आंखों में पैदा होते हैं और वहीं पर खत्म भी हो जाते हैं कुछ लोग जो थोड़ा साहस करते हैं, वह प्यार को वास्तविकता में जीने का प्रयास करते हैं, लेकिन जैसे ही उसे सार्वजनिक करने की बात आती है तो वे समाज के डर से पीछे हट जाते हैं। समाज के डर के अलावा उनके भीतर भी जाति और वर्ग की सत्ता काम कर रही होती है, उससे कई लोग लड़ना नहीं चाहते क्योंकि वह समाज की गैरबराबरी की सत्ता से टकराना नहीं चाहते। बल्कि इसी व्यवस्था में समाहित होकर सुविधाजनक जीवन जीना चाहते हैं। इसलिए वे एक समय के बाद प्रेम को भी अपने स्वार्थ के हिसाब से तौलने लगते हैं और जैसे ही प्यार का पलड़ा हल्का होता है उसे जीवन से उठाकर फेंक देते हैं। लेकिन बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने प्यार के प्रति हमेशा प्रतिबद्ध रहते हैं। वे लोग प्यार को जीवन और समाज से जोड़कर देखते हैं इसलिए वह अपने प्रेम सम्बंधों को जीने के लिए किसी भी तरह के खतरे को स्वीकारते हैं। वह स्थापित प्यार विरोधी संस्थाओं परिवार, पितृसत्ता, जाति, वर्ग, धर्म सभी मान्य और मजबूत मठों को चुनौती देते हैं, क्योंकि वह समाज की हर मान्यता को खारिज करते हैं इसलिए वह सब कुछ नये तरह का चाहते हैं। समाज, संस्कृति, राजनीतिक व्यवस्था वह सब कुछ को बदलते देखना चाहते हैं। वह इस तरह का समाज चाहते हैं जिसमें समानता हो और प्यार करने व जीने की आजादी हो। यहीं से प्यार व्यवस्था विरोध का एक नया मोड लेता है। व्यक्तिगत प्यार के आड़े रोज व्यवस्थायें टकराती हैं, गांव, गली-मुहल्लों और कस्बों में प्यार करने वाले पितृसत्ता और जाति व्यवस्था से टकराते हैं। रोहतक के प्रेमी युगल की तरह अपनी हत्या के लिए भी तैयार रहना पड़ता है। भारतीय समाज में प्यार करना बेशर्मी जैसा बना हुआ है, इसीलिए शायद यहां दो लोग़ों के प्यार करने पर परिवार की इज्जत चली जाती है। किसी पुरुष के बलात्कार करने पर यहां परिवार की इज्जत नहीं जाती पर अन्तर्जातीय, अन्तर्धर्मीय, गरीब-अमीर के आपस में प्यार करने से इस समाज की इज्जत चली जाती है। प्यार करना एक व्यक्तिगत फैसला भले ही हो पर यह राजनीतिक मसला ही बनता है। आपके न चाहते हुए भी प्यार सत्ताओं के सम्बंधों से ही संचालित होता है। जड़ समाज के लिए यह गंभीर मसला है क्योंकि यह सामाजिक बदलाव का एक दरवाजा खोलता है, स्थापित सत्तास सम्बंधों को चुनौती देता है, और जब भी प्यार से इस तरह की चुनौती मिलती है उसका गला घोंट दिया जाता है। इसलिए जो लोग प्यार करने में विश्वास रखते हैं, उन्हें प्यार को गंभीरता से लेना चाहिए। प्यार को राजनीतिक दायरे में सोचना चाहिए, प्यार करने की स्वतंत्रता के लिए व्यक्तिगत संघर्ष जितना जरूरी है, उसे बचाये रखने के लिए सामुहिक संघर्ष भी उतना ही जरूरी है। प्यार में होना ही प्यार किये जाने के लिए काफी नहीं होता, इसके लिए हमें अपने समाज और राजनीतिक संरचना को समझना भी जरूरी है, तभी हम प्यार को बचा सकते हैं और सामाजिक बदलाव के हिस्से के रूप में उसकी भूमिका बना सकते हैं। नहीं तो कुछ समय बाद अन्य रिश्तों की तरह प्रेम भी नीरस, परेशान करने वाला और जीवन में बोझिल-सा हो जाता है और अन्त में जब बदलाव और असहमतियों की गुंजाइश खत्म हो जाती है तो यही प्यार उत्पीड़क हो जाता है। जिस उत्पीड़न का बड़ा हिस्सा महिलाओं के ही हिस्से में आता है। कुछ लोग या तो इसका समाधान सम्बंध तोड़ने में खोजते हैं या फिर इसे सामंती समाज की तरह वह भी इज्जत का मामला बना देते हैं और उसके साथ घिसटते रहते हैं।

> **कहानियों, फिल्मों से इतर भारतीय समाज में प्यार करना अभी भी अच्छा नहीं माना जाता। जब कोई प्यार करता है तो समाज के कैमरे में उसकी हर गतिविधि कैद होती है और यहां कुछ तो आपके सामने कहा जा रहा होता है और कुछ चटकारे लेते हुए फुसफुसाहटों के साथ बताया जा रहा होता है। ऐसा क्यों है कि प्यार की लोग घंटों चीड़फाड़ करते हैं? युवा समूहों में भी प्यार के बारे में सबसे ज्यादा बातचीत होती है पर वह बातचीत सेक्सुअल प्लेजर लेने के लिए ज्यादा इन्हीं चीज़ों पर बात करते हैं, क्योंकि वे इसे राजनीतिक काम के रूप में कभी नहीं देखते। यह उनके जीवन में राजनीति से एक इतर प्रसंग होता है। भारतीय समाज में प्यार को पा लेना एक कठिन लड़ाई है।**

जिस तरह लोग प्यार किये जाने को स्वीकार नहीं करते उसी तरह करने वाले प्यार के टूट जाने को भी स्वीकार नहीं कर पाते हैं। सामंती समाजों की तरह यह भी उनके लिए इज्जत का ही रूप बनता है। इस दबाव में कई लोग बिना प्यार के कई सालों तक साथ गुजार देते हैं, वे अपने जीवन का जीने के बजाय सामाजिक बंधनों और सामंती मूल्यों को ही जी रहे होते हैं। यह उनके अराजनीतिक नजरिये से प्यार को देखने का ही परिणाम होता है। समाज की बजाय प्रेम सम्बंधों में रहने वाले व्यक्तियों के लिए यह स्वीकार करना मुश्किल होता है कि अब उनके बीच प्यार नहीं रहा। प्यार क्यों था और अब क्यों नहीं रहा, इसका विश्लेषण करने की बजाय वह इसे ढोते रहना चाहते हैं। प्यार करना उनके लिए मायने रखता है, लेकिन खत्म होने को भी विश्लेषित ही नहीं करना चाहते, क्योंकि यह एक जटिल प्रक्रिया होती है आत्मविश्लेषण व समाज और व्यक्ति के बीच संघर्ष की। उनमें प्रेम को बचाने की कोई तड़प भी नहीं होती। अन्य रिश्तों की तरह प्यार को भी ढोने का आदत लोग़ों को ज्यादा सुविधाजनक लगती है। जबकि अन्य रिश्तों से अलग यह उनका चुनाव होता है, यह थोपा गया नहीं होता, इसलिए लोकतांत्रिक मूल्यों की ज़्यादा गुंजाइश इसमें बनती है। इसलिए कठिन सवालों से वही प्रेमी टकराने की कोशिश करते हैं जो प्रेम को राजनीतिक मानते हैं और उसे अन्य राजनीतिक मसलों की तरह महत्त्व देते हैं। दो लोगों का प्रेम एक मजबूत प्रतिरोधी सत्ता का निर्माण करता है, जिसकी जड़े सामाजिक राजनीतिक संरचनाओं में होती है। अगर प्रेम सम्बंधों में विरुद्ध की सत्ता को समझने और इसे कमजोर करने का प्रयास नहीं होता तो जाति, वर्ग, पितृसत्ता की ही जीत होती है, क्योंकि उनके अनुभवों और मान्यताओं का इतिहास बड़ा है। ऐसे में प्यार जो कि अपने शुरूआती समय में समानता और सम्मान की पराकाष्ठा पर होता है, वह एक ठंडी बर्फ की नदी में बदल जाता है।